आशीष छांव :- महासमाधि धारक परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज
आशीर्वाद प्रदाता :- परम पूज्य आचार्य श्री 108 समयसागर जी महाराज

प्रेरणा/मार्गदर्शन:
मुनि श्री 108 विमल सागर जी महाराज, मुनि श्री 108 अनंत सागर जी महाराज
मुनि श्री 108 धर्म सागर जी महाराज, मुनि श्री 108 भाव सागर जी महाराज

पुण्यार्जक - श्री रतनलाल, श्रीमति चतरदेवी - श्री कंवरलाल, श्रीमति सुशीला - श्री अशोक कुमार, श्रीमती शान्ता- श्री सुरेश कुमार, श्रीमती तारिका-श्री विमल कुमार, श्रीमती शुचि-श्री विनीत कुमार श्रीमती श्रद्धा- श्री विकास, श्रीमति ईशा-श्री विनय कुमार, श्री विवेक कुमार, श्री ऋषभ कुमार, आदि, विवान, अर्हन पाटनी आर. के. मार्बल, बंडर सीमेण्ट परिवार, मदनगंज किशनगढ़, अजमेर - उदयपुर (राजस्थान)

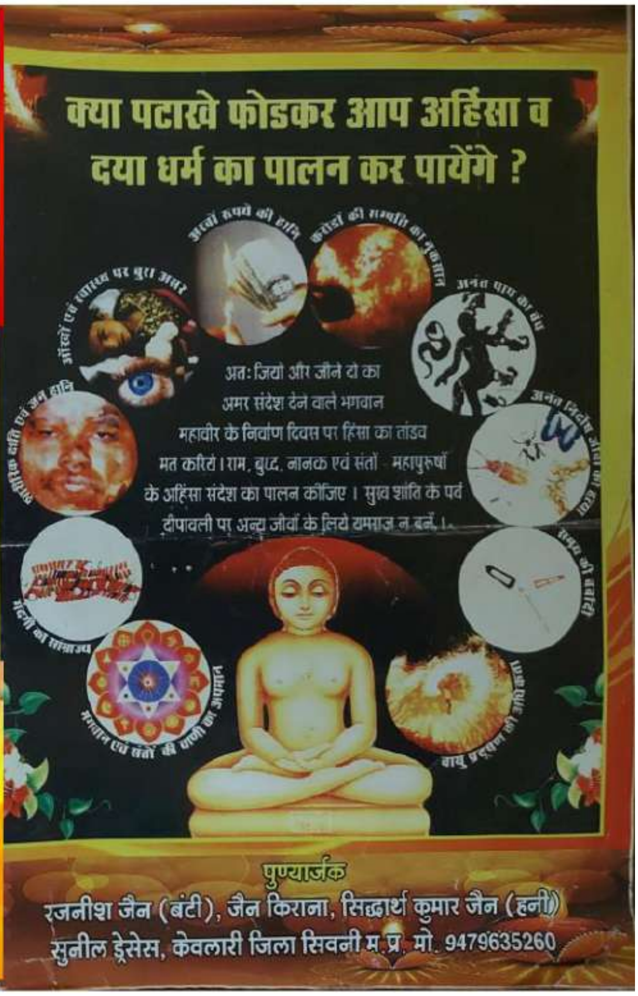
क्या पटाखे फोडकर आप अहिंसा व
दया धर्म का पालन कर पायेंगे ?
अरबों रुपये की हानि
अनंत पाप का बंध
अत: जियो और जीने दो का
अमर संदेश देने वाले भगवान
महावीर के निर्वाण दिवस पर हिंसा का तांडव
मत करिये। राम, बुध्द, नानक एवं संतों - महापुरूषों
के अहिंसा संदेश का पालन कीजिए। सुख शांति के पर्व
दीपावली पर अन्य जीवों के लिये यमराज न बनें।
पुण्यार्जक
रजनीश जैन (बंटी), जैन किराना, सिद्धार्थ कुमार जैन (हनी)
सुनील ड्रेसेस, केवलारी जिला सिवनी म.प्र. मो. 9479635260

दीपावली पूजन विधि

(दिगम्बर जैन धर्म अनुसार)

आशीष छांव:

महासमाधि धारक मूकमाटी रचियता, बाल ब्रह्मचारी संघ नायक ,
विश्व प्रसिद्ध दिगम्बर जैनाचार्य परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज

परम पूज्य आचार्य श्री 108 समय सागर जी महाराज

प्रेरणा/मार्गदर्शन:

मुनि श्री 108 विमल सागर जी महाराज, मुनि श्री 108 अनंत सागर जी महाराज
मुनि श्री 108 धर्म सागर जी महाराज, मुनि श्री 108 भाव सागर जी महाराज

प्रकाशन 12-10-2024

ग्राफिक्स वर्शिल जैन, जैन टीवी एण्ड कार्ड गौरझामर जिला सागर (मध्य प्रदेश) 9806292512 , 9179332635
प्रशीश जैन, आर्यिका स्टूडियो, खांदू कॉलोनी बाँसवाड़ा (राजस्थान)94141 04059

पुण्यार्जक :

श्री रतनलाल, श्रीमति चतरदेवी - श्री कंवरलाल, श्रीमति सुशीला - श्री अशोक कुमार,,श्रीमती शान्ता - श्री सुरेश कुमार
श्रीमती तारिका - श्री विमल कुमार, श्रीमती शुचि-श्री विनीत कुमार श्रीमती श्रद्धा - श्री विकास,
श्रीमति ईशा - श्री विनय कुमार श्री विवेक कुमार,श्री ऋषभ कुमार, आदि, विवान, अर्हन पाटनी
आर. के. मार्बल, वंडर सीमेण्ट परिवार, मदनगंज किशनगढ़, अजमेर - उदयपुर (राजस्थान)

दीपावली पर्व निर्देशन

दीपावली में पूजा आदि क्रियाएँ रात्रि में सम्पन्न करते है जो जैन धर्मानुसार उचित नहीं हैं। जैन धर्म के अनुसार दिन में ही भोजन एवं पूजन सूर्योदय से सूर्यास्त तक किये जाते हैं।

1 पूजन हेतु स्थान की शुद्धि करके ऊँची टेबिल पर उत्तर,पूर्वाभिमुख जनवाणी विराजमान कर पूजन अनुष्ठान शुद्ध वस्त्रों में सूर्यास्त से पूर्व सम्पन्न करें।

2 पूजन में भगवान की अप्रतिष्ठित धातु,प्लास्टिक की मूर्तियाँ,चित्र फोटो केलेण्डर आदि नहीं रखना चाहिए क्योंकि वह पूजनीय नहीं है। अतः पूजा हेतू जिनवाणी रखें।(आचार्य श्री का चित्र एवं सच्चे,देव,शास्त्र,गुरु के चित्र रखे)

3 पूजन में रुपया,सिक्का,खाद्यान्न आदि न रखें,दीपावली के दिन ज्ञानलक्ष्मी की आराधना एवं कामना करें।

4 व्यापारिक उपकरण तराजू ,बाँट,मीटर,आदि की पूजा न करके वास्तिक अंकित कर उन्हें शुद्ध तथा व्यवस्थित एवं निष्ठापूर्वक व्यापार करने का संकल्प करें।

5 अक्षत,आदि मंगल द्रव्य के रूप में रखें पर उनसे पूजन न करके प्रज्वलित दीपों से आरती करें।

6 दीपावली पावन पर्व है अतः जुआ ,सट्टा, मद्यपान आदि खोटे कर्म नहीं करना चाहिए।

7 पूजन के बाद मिष्ठान वितरण प्रसाद के रूप में न करें क्योंकि जैन शास्त्रों में प्रसाद वितरण का कोई उल्लेख नही है।

8 धनतेरस (धन्य त्रयोदशी) के दिन महावीर भगवान योग निरोध करके मुक्ति लक्ष्मी पाने को अग्रसर हुऐ थे इसी भावना से पूजानुष्ठान आदि करें परन्तु धार्मिक मान्यता से बर्तन,रजत या स्वर्णादि क्रय नही करना चाहिए।

9 पटाखें से अत्याधिक जीव हिंसा एवं प्रदूषण होता है स्वयं को हानि होती है एवं पाप का भी भारी बन्ध होता है,अतः पटाखों का प्रयोग न करें।

10 गरीबों को वस्त्र,भोजन,औषधि,मिठाई आदि सामग्री दे जिससे वह भी आपके जैसा पर्व मना सकें।

दीपावली पूजन विधि

अनादि काल से भरत क्षेत्र मे अंनत चौबीसी होती आयी है इसी क्रम मे इस युग मे भी ऋषभदेव से लेकर महावीर पर्यन्त चौबीस तीर्थंकर हुए। तेईसवे तीर्थंकर पार्श्वनाथ के 256 वर्ष साढे तीन माह के बाद अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर को कार्तिक कृष्ण अमावस्या को मोक्ष प्राप्त हुआ था। तथा उनके प्रथम गणधर इन्द्रभूती गौतम को अपराह्निक
काल में उसी दिन कैवल्यज्ञान की प्राप्ति हुई थी इसी के प्रतीक के रुप मे कार्तिक कृष्ण अमावस्या को दीपावली पर्व मनाया जाता है।

प्रातःकाल पूजा विधि (मंदिर जी में) प्रातः काल सूर्योदय के समय स्नानादि करके पवित्र वस्त्र पहनकर जिनेन्द्र देव के मंदिर जी मे परिवार के साथ पहुँचकर जिनेन्द्र देव की वन्दना करनी चाहिए तदुपरान्त थाली मे अथवा मूलनायक भगवान की वेदी पर चार-चार बाती वाले सोलह दीपक प्रज्ज्वलित करना चाहिए तथा भगवान महावीर स्वामी की पूजन निर्वाण काण्ड पढने के पश्चात् महावीर स्वामी के मोक्ष कल्याणक का अर्घ्य बोलकर निर्वाण लाडू चढाना चाहिए। नगर में साधु होने पर आहारदान करके भोजन करें।

निर्वाण लाडू चढाने वाले दिन शाम को श्रावकगण अपने-अपने घरों में दीपावली पूजन करते हैं। दीपकों का मनोहर प्रकाश करते है। श्री जिन मंदिर जी में व अपनी दुकानों पर दीपको को सजाते है और प्रमुदित होते है।

संध्या काल में पूजा विधि (घर मे) :अपराह्न काल में गोधूलि बेला में (सायं 4 से 6 बजे तक) में घर के ईशान कोण (उत्तर-पूर्व में) अथवा घर के मुख्य कमरे मे पूर्व की दीवार अथवा सुविधाअनुसार दीवार पर माडना (श्री का पर्वताकर लेखन) बनाकर चौकी के ऊपर जिनवाणी एवं भगवान महावीर स्वामी की तस्वीर रखनी चाहिए अन्य चित्रादि नही रखना चाहिए क्योंकि जैन धर्म मे इसका कोई उल्लेख नही है। घर के मुखिया अथवा किसी अन्य सदस्य को एवं सभी सदस्यो को शुद्ध धोती दुपट्टा पहनकर दीपमालिका के बायी तरफ आसन लगाकर बैठना चाहिए सोलहकारण भावना के प्रतीक रुप चौकी पर सोलह दीपक प्रज्ज्वलित

करना चाहिए। इन्ही सोलह कारण भावनाओ को भाकर तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध भगवान महावीर स्वामी ने किया था इसी के प्रतीक स्वरुप सोलह दीप चार चार बातियों वाले जलाऐ जाते है।(16x4=64)का यह अंक चौसठ ऋद्धि का प्रतीक है भगवान महावीर चौसठ ऋद्धियों से युक्त थे। अत: सोलह दीपक चौसठ बत्तियों से जलाकर दीपको में शुद्ध देशी घी उपयुक्त होता है।(घृत की अनुलब्धि पर यथायोग्य शुद्ध तेल का प्रयोग किया जा सकता है।) दीपको पर सोलह भावना अंकित करनी चाहिए। इन्हे जलाने के पश्चात् दीपावली पूजन,लय एवं शुद्धोच्चारण के साथ विनय पाठ,पूजन पीठिका, स्वस्तिपाठ,परमर्षि स्वस्ति पाठ पढकर देव,शास्त्र,गुरु,वर्तमानचौबीसी,आदिनाथ,चन्द्रप्रभ,शान्तिनाथ,पार्श्वनाथ और महावीर स्वामी का अर्घ्य चढाकर गौतमस्वामी एवं सरस्वती पूजन करके शान्तिपाठ पूर्वक विसर्जन करें। पूजनोपरान्त सोलहकारण भावना के प्रतीक सोलह दीपकों में 64 बाती जलाकर महावीराष्टक पढ़ें,आरती करें तथा दीपकों को मंन्दिरजी गृहद्वार रसोईघर एवं सभी कमरों में रखें। आसपास रहने वाले सम्बन्धियों के यहाँ भी दीपक भेज सकते हैं। सरस्वती (जिनवाणी) पूजन चौसठ ऋद्धि का अर्घ्यं,धुली हुई अष्ट द्रव्य से चढाना चाहिए। पूजन से पूर्व तिलक एवं मौली बन्धन सभी की करना चाहिए।

दुकान का पूजन : इसी प्रकार दुकान पर भी पूजन करनी चाहिए अथवा लघु रुप मे पंच परमेष्ठी के प्रतीक रुप पाँच दीपक प्रज्ज्वलित कर पूजन करनी चाहिए। पूजन करने से पूर्व अष्ट द्रव्य तैयार कर एक चौकी पर रख ले। दूसरी चौकी पर स्वस्तिक बनाये मंगल कलश की स्थापना करे। उत्तम धातु के स्वस्तिक या श्री हो तो कलश के अंदर रखें।

एक चौकी पर बही (पुस्तक) के अंदर सीधे पृष्ठ पर ऊपर हल्दी या रोली से स्वस्तिक बनाये तथा श्री का पर्वताकार लेखन करे।

जैन समाज मे भी इस दिन बही खाते बदलने की और नये कार्य प्रारम्भ करने की परम्परा चली आ रही है, क्योंकि वह युग परिवर्तन का समय था इसलिए नई व्यवस्था के प्रारम्भ के योग्य यह समय माना गया।

दुकान पर दीपावली एवं बही शुभारम्भ

श्री महावीरस्वामिने नमः

श्री लाभ 卐 श्री शुभ

श्री

श्री श्री

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

बही बनाने के मंत्र

श्री ऋषभस्वामिने नमः श्री महावीरस्वामिन नमः

श्री गौतम गणधराय नमः श्री केवलज्ञान–लक्ष्मी देव्यै नमः

श्री जिन मुखोद् भव सरस्वती देव्यै नमः

श्री शुभ मिति कृष्णा अमावस्या वीर निर्वाण संवत् ....विक्रम संवत् ....दिनांक..........मास..........सन् ....ई.............वार को श्री (दुकान मालिक का नाम)...............की प्रतिष्ठान का नाम .... की दुकान की बही का शुभ मुहुर्त किया । यह हो जाने के बाद विधि कराने वाले,दुकान के प्रमुख सज्जन को बही हाथ में देवें और पुष्य क्षेपण करे।

(उपर्युक्त विषय नई वही वर लिखें।)

जल पड़े है दीप दिल के,इस दिवाली पर सभी।
जीत लेगे हर तिमिर को,इस दिवाली पर सभी।।
रोशनी उम्मीद और विश्वास की फैली रहे।
जग मगाएं ,मुस्काएँ इस दिवाली पर सभी।।

पूजन विर्सजनः शान्ति पाठ एवं विर्सजन करके घर का एक व्यक्ति अथवा बारी बारी सभी व्यक्ति मुख्य दीपक को अखण्ड प्रज्ज्वलित करते हुऐ रात भर णमोकार मंत्र का जाप अथवा पाठ या भक्तामर स्त्रोत आदि पाठ करते हुए शक्ति अनुसार रात्रि जागरण करना चाहिये यदि रात्रि जागरण नही कर सके तो कम से कम मुख्यदीपक में यथायोग्य घृत भरकर उसे जाली से ढककर उसी स्थान पर रात भर जलने देना चाहिए। शेष दीपकों में से एक दीपक मंदिर मे भेज देना चाहिए । यदि निकट मे कोई सम्बन्धी रहते है तो वहाँ भी दीपक भेजा जा सकता है। अथवा शेष दीपको को घर के मुख्य दरबाजे पर एवं मुख्य मुख्य स्थानो पर रखे जा सकते है। मिष्ठान आदि का वितरण करना है तो पूजा समाप्ति के पश्चात पूजन स्थल से थोडा दूर हटकर वितरण करे। रात्रि मे अन्न की वस्तु का खाने हेतु वितरण न करे।

पूजा के पश्चात निर्माल्य सामग्री पशु पक्षियों को अथवा मंदिर के माली को दी जा सकती है।

चौबीस स्वस्तिक या ओम् के बन्दनवार बनाकर दरवाजे के बाहर बाँधने चाहिए जो चौबीस तीर्थंकरों के प्रतीक है।

(समुच्य मंत्र- ओं ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यो नमः)

नोटः दीपावली के दिन पटाखे,अनार बिलकुल न जलावे। इससे लाखों जीवों का घात होता है। पर्यावरण दूषित होता है स्वयं को भी हानि हो जाती है और भारी पाप का बन्ध होता है अत:अपने बच्चो को इस बुरी आदत से रोके क्योंकि कई पशु पक्षियो के गर्भ गिर जाते है या मरण हो जाता है। कई मकान,दुकानें झोपडियाँ जल जाती है तथा अंगोपांग नष्ट हो जाते हैं।

पूजा ब्र. भैया,विधानाचार्य,पंडित जी या कुटुम्ब के मुखिया को स्नान कर धोती दुपट्टा पहनकर करना चाहिए।

पूजन में बैठे हुए सभी सज्जनों का निम्न मंत्र बोलकर तिलक करे।

मंगलं भगवान वीरो,मंगलं गौतमोगणी।

मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो,जैन धर्मोऽस्तु मंगलं।।

इसके बाद निम्न मंत्र पढकर सभी सज्जनों को शुद्धि के लिए थोडे से जल के हल्के छीटे दें।

अमृत स्नान मंत्र

मनः प्रसत्यै वचसः पसत्यै कायः प्रसत्यै च कषाय च हानिः।

सैवार्थतः स्यात्सकलीक्रियान्या मन्त्रैरुदारैः कृतिकल्पनांगा।।

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षणि,अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय सं हं झ्वीं क्ष्वीं ठःठः हं सः स्वाहा।

(इस मन्त्र से जल को मन्त्रित कर शरीर पर छिटककर शुद्धि करे)

मंगल कलश स्थापना मंत्र

(पीले चावल से स्वास्तिक बनाकर मंगल कलश की यह मंत्र पढते हुए स्थापना करे)

ॐ ह्रीं आद्यानामाद्ये मध्यलोके,जम्बूद्वीपे,भरत क्षेत्रे,आर्यखण्डे भारत देशे ....प्रदेश ....जिले...........नगरे.............मासे...........पक्षे. . ...अमावस्यां संध्याकाले गौतम गणधर पूजायांभूमि शुर्द्धयर्थं,पात्र शुद्धयर्थं,शान्तयर्थं पुण्य संचायर्थं,केवल ज्ञान प्राप्त्यर्थंःनवरत्न,गंध पुष्पाक्षत श्री फलादि शोभितं शुद्ध प्रासुक जल प्रपूरितं मंगल कलश स्थापनं करोमि।

दीप प्रज्ज्वलन मंत्र

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्णं अमावस्यां मोहितिमिर विनाशनाय दीपंप्रज्ज्वलन करोमि।

शास्त्र स्थापना मंत्र

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः स्थापनं करोमि ।

पूजा प्रारम्भ

ॐ जय जय जय। नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु।

णमो अरिहंताणं,णमो सिद्धाणं,णमो आइरियाणं।

णमो उवज्झायाणं ,णमो लोए सव्वसाहूणं।।

ॐ ह्रीं. अनादि मूल-मन्त्रोभ्यो नमः(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चत्तारि मंगलं -अरिहंता मंगलं,सिद्धा मंगलं

साहू मंगलं,केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमा,सिद्धा लोगुत्तमा

साहू लोगत्तमा,केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरिहंते सरणं पव्वज्जामि

सिद्धे सरणं पव्वज्जामि-साहू सरणं पव्वज्जामि

केवलि-पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अर्घ्यावली

श्री देव शास्त्र गुरु

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत,पुष्प चरु दीपक धरुं।

वर धूप निर्मल फल विविध बहु,जन्म के पातक हरुं।।

इह भातिं अर्घ चढाय नित,भवि करत शिव पंकति मचूं।

अरहन्त श्रुत सिद्धान्त गुरु,निग्रर्थं नित पूजा रचूं।।

वसुविधि अर्घ संजोय कै,अति उछाह मन कीन।।

जासो पूजों परम पद देव शास्त्र गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरुभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्य निर्वपामति स्वाहा।

विद्यमान बीस तीर्थंकर

जल फल आठो द्रव्य,अरघ कर प्रीति धरी है।

गणधर इन्द्रनिहूतैं,थुति पूरी न करी है।।

द्यानत सेवक जानके,जगतैं लेहु निकार।

सीमन्धर जिन आदि दे, स्वामी बीस विदेह मंझार।।

श्री जिनराज हो, भवतारण तरण जिहाज।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्य निर्वपामति स्वाहा।

श्री महावीर स्वामी जी

जल फल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरो।
गुणगाऊँ भवदधि तार , पूजत पाप हरो।।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्य निर्वपामति स्वाहा।

सरस्वती (जिनवाणी)

जल चंदन अक्षत फूल चरु, दीप धूप अति फल लावै।
पूजा को ठानत, जो तुम जानत सो नर द्यानत सुख पावे।।
तीर्थंकर की ध्वनि गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञान मई।
सो जिनवर वानी शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वती देव्यै अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।।

गौतम स्वामी

गौतमादिक सर्वे एक दश गणधरा, वर जिनके मुनि सहसचौदहवरा।
नीर गंधाक्षतं पुष्प चुरु दीपकं, धूप, फल अर्घ ले हम जजे महर्षिकं।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनरस्य गौतमाद्येकादश गणधर चतुर्दश सहस्त्रमुनिवरेभ्योअध्यर्म् निर्वपामीति स्वाहा।।

इसके बाद शांति पाठ पढ़े विसर्जन करें। परिवार के सभी जनों को तिलक लगाये। अन्न रहित मिष्ठान से सत्कार करें।

आओं अंधकार मिटाने का हुनर सीखें हम।
कि वजूद अपना बनाने का हुनर सीखे हम।।
रोशनी और बढ़े और उजाला फेले।
दीप से दीप जलाने का हुनर सीखे हम।।

श्री गौतम गणधर पूजन

जय जय इन्द्रभूति गौतम गणधर स्वामी मुनिवर जय जय।
तीर्थंकर श्री महावीर के प्रथम मुख्य गणधर जय जय ।।
द्वादशाङ्ग श्रुत पूर्ण ज्ञानधारी गौतम स्वामी जय जय।
वीर प्रभु की दिव्य ध्वनि जिनवाणी को सुन हुए अभय।।
ऋद्धि सिद्धि मंङ्गल के दाता मोक्ष प्रदाता गणधर देव।
मंगलमय शिव पथ पर चलकर मैं सिद्ध बनूँ स्वयमेव।।

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधर स्वामिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वनन।
ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधर स्वामिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधर स्वामिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्सन्निधिकरणं।

मैं मिथ्यात्व नष्ट करने को निर्मल जल की धार करूँ।
सम्यग्दर्शन पाऊँ अरू जन्म मरण क्षय कर भव रोग हरूँ।।
गौतम गणधर के चरणों की मैं करता पूजन।
देव आपके द्वारा भाषित जिनवाणी को करूँ नमन।।

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधर स्वामिने जन्मजरा मृत्युविनाशनाय जलम् नि. स्वाहा

पञ्च पाप अविरति को त्यागूँ शीतल चन्दन चरण धरूँ ।
भव आताप नाश करके प्रभु मैं अनादि भव रोग हरूँ।। गौ.

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधर स्वामिने संसारताप विनाशनाय चन्दनम् नि.स्वाहा।

पञ्च प्रमाद नष्ट करने को उज्ज्वल अक्षत भेंट करूँ।
अक्षत पद की प्राप्ति हेतु प्रभू मैं अनादि भव रोग हरूँ।। गौ.

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधर स्वामिने अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् नि. स्वाह

चार कषाय अभाव हेतु मैं पुष्प मनोरम भेट करूँ।
काम बाण विध्वंस करूँ प्रभु मैं अनादि भव रोग हरूँ।। गौ.

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधर स्वामिने कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम् नि. स्वाहा

मन वच काया योग सर्व हरने को प्रभु नैवेद्य धरूँ।
क्षुधा व्याधि का नाम मिटाऊँ मैं अनादि भव रोग हरूँ।। गौ.

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधर स्वामिने क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि. स्वाहा.

सम्यकज्ञान प्राप्त करने को अन्तर दीप प्रकाश करूँ।
चिर अज्ञान तिमिर को नाशूँ मै अनादि भव रोग हरूँ।। गौ.
ॐ ह्री श्री गौतमगणधर स्वामिने मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् नि.स्वाहा
मैं सम्यक चारित्र ग्रहण कर अन्तर तप की धूप वरूँ।
अष्ट कर्म विध्वंस करूँ प्रभु मै अनादि भव रोग हरूँ।। गौ.
ॐ ह्री श्री गौतमगणधर स्वामिने अष्ट कर्म विनाशय धूपम् नि.स्वाहा
रत्नत्रय का परम मोक्ष फल पाने को फल भेट करूँ।
शुद्ध स्वपद निर्वाण प्राप्त कर मैं अनादि भव रोग हरूँ।। गौ.
ॐ ह्री श्री गौतमगणधर स्वामिने मोक्षफल प्राप्तये फलम् नि.स्वाहा
जल फलादि वसु द्रव्य अर्घ्य चरणों में सविनय भेंट करूँ।
पद अनर्घ्य सिद्धत्व प्राप्त कर मैं अनादि भव रोग हरूँ।। गौ.
ॐ ह्री श्री गौतमगणधर स्वामिने अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यम् नि. स्वाहा
श्रावण कृष्ण एकम् के दिन समवशरण में तुम आए।
मानस्तम्भ देखते ही तो मान मोह अघ गल पाए।।
महावीर के दर्शन करते ही मिथ्यात्व हुआ चकचूर।
रत्नत्रय पाते ही दिव्यध्वनि का लाभ लिया भरपूर।।
ॐ ह्री श्री दिव्यध्वनि प्राप्ताय गौतम गणधर स्वामिने अर्घ्यम् नि. स्वाहा
कार्तिक कृष्ण अमावस्या को कर्म घातिया करके क्षय।
सायंकाल समय मे पाई केवलज्ञान लक्ष्मी जय।।
ज्ञानावरण दर्शनावरणी मोहनीय का करके अंत।
अन्तराय का सर्वनाश कर तुमने पाया पद भगवन्त।।
ॐ ह्रीं श्री केवलज्ञान प्राप्ताय गौतम गणधर स्वामिने अर्घ्यम् नि.स्वाहा।
विचरण करके दुखी जगत कें जीवों का कल्याण किया।
अन्तिम शुक्ल ध्यान के द्वारा योगों का अवसान किया।।
देव! बानवे वर्ष अवस्था मे तुमने निर्वाण लिया।
क्षेत्र गुणावा करके पावन सिद्ध स्वरूप महान लिया।।
ॐ ह्रीं श्री मोक्षपद प्राप्ताय गौतम गणधर स्वामिने अर्घ्यम् नि. स्वाहा।

जयमाला

मगध देश के गौतमपुर वासी वसुभूति ब्राह्मण पुत्र।
माँ पृथ्वी के लाल लाड़ले इन्द्रभूति तुम ज्येष्ठ सुपुत्र।।
अग्निभूति अरु वायुभूति लघु भ्राता द्वय उत्तम विद्वान।
शिष्य पाँच सौ साथ आपके चौदह विद्या ज्ञान निधान।।
शुभ वैसाख शुक्ल दशमी को हुआ वीर को केवलज्ञान।
समवशरण की रचना करके हुआ इन्द्र को हर्ष महान।।
बारह सभा बनी अति सुन्दर गन्धकुटी के बीच प्रधान।
अन्तरिक्ष में महावीर प्रभु बैठे पद्मासन निज ध्यान।।
छियासठ दिन हो गए दिव्य ध्वनि खिरी नही प्रभु की यह जान।
अवधिज्ञान से लखा इन्द्र ने "गणधर की है कमी प्रधान"।।
इन्द्रभूति गौतम पहले गणधर होंगे यह जान लिया।
वृद्ध ब्राह्मण वेश बना गौतम के गृह प्रवेश किया।।
पहुँच इन्द्र ने नमस्कार कर किया निवेदन विनयमयी।
मेरे गुरु श्लोक सुनकर मौन हो गए ज्ञानमयी।।
अर्थ भाव वे बता न पाए वही जानने आया हूँ।
आप श्रेष्ठ विद्धान् जगत में शरण आपकी आया हूँ।।
इन्द्रभूति गौतम श्लोक श्रवण कर मन में चकराए।
झूठा अर्थ बताने के भी भाव नहीं उर में आए।।
मन मे सोचा तीन काल,छः द्रव्य,जीव षट् लेश्या क्या?
नव पदार्थ, पंञ्चास्तिकाय,गति,समिति,ज्ञान,व्रत चारित क्या ?
बोले गुरु के पास चलो मैं वहीं अर्थ बतलाऊँगा।
अगर हुआ तो शास्त्रार्थ कर उन पर भी जय पाऊँगा।।
अति हर्षित हो गए इन्द्र हृदय में बोला स्वामी अभी चलें।
शंङ्काओं का समाधान कर मेरे मन की शल्य दलें।।
अग्निभूति अरु वायुभूति दोनो भ्राता संङ्ग लिए जभी।
शिष्य पाँच सौ संङ्ग ले गौतम साभिमान चल दिए तभी।।
समवशरण की सीमा में जाते ही हुआ गलित अभिमान।

प्रभु दर्शन करते ही पाया सम्यक्‌दर्शन सम्यग्ज्ञान।।
तत्क्षण सम्यक्‌चारित धारा मुनि बन गणधर पद पाया।
अष्ट ऋद्धियाँ प्रगट हो गई ज्ञान मन:पर्यय छाया।।
खिरने लगी दिव्यध्वनि प्रभु की परम हर्ष उर में आया।
कर्म नाशकर मोक्ष प्राप्ति का अपूर्व अवसर पाया।।
ओंकार ध्वनि मेघ गर्जना सम होती है गुणशाली।
द्वादशांङ्ग वाणी तुमने अन्तर्मुहूर्त में रच डाली।।
दोनों भ्राता शिष्य पाँच सौ ने मिथ्यात्व तभी हरकर।
हर्षित हो जिन दीक्षा ले ली दोनों भ्रात हुए गणधर।।
राजगृही के विपुलाचल पर प्रथम देशना मंङ्गलमय।
महावीर संदेश विश्व ने सुना शाश्वत शिव सुखमय।।
इन्द्रभूति, श्री अग्निभूति, श्री वायुभूति शुचिदत्त, महान्।
श्री सुर्धम, माण्डव्य मौर्यसुत, श्री अकम्य, अति ही विद्धान्।।
अचल, मेदार्य और प्रभास यही ग्यारह गणधर गुणवान्।
महावीर के प्रथम शिष्य तुम हुए मुख्य गणधर भगवान्।।
छह-छह घड़ी दिव्यध्वनि खिरती चार समय मंङ्गलमय।
वस्तु तत्व उपदेश प्राप्त कर भव्य जीव होते निजमय।।
तीस वर्ष रह समवशरण मे गूँथा श्री जिनवाणी को।
देश-देश में कर बिहार फैलाया श्री जिनवाणी को।।
कार्तिक कृष्ण अमावस प्रात: महावीर निर्वाण हुआ।
सन्ध्याकाल तुम्हें भी पावापुर में केवलज्ञान हुआ।।
ज्ञान लक्ष्मी तुमने पाई और वीर प्रभु ने निर्वाण।
दीप-मालिका पर्व विश्व में तभी हुआ प्रारम्भ महान।।
आयु पूर्ण जब हुई आपकी योग नाश निर्वाण लिया।
धन्य हो गया क्षेत्र गुणावा देवों ने जयगान किया।।
आज तुम्हारे चरण कमल के दर्शन पाकर हर्षाया।
रोम-रोम पुलकित हैं मेरे भव का अन्त निकट आया।।
मुझको भी प्रज्ञा छैनी दो मैं निज पर में भेद करूँ।

भेदज्ञान की महाशक्ति से दुखदायी भव खेद हरूँ।।
पद सिद्धत्व प्राप्त करके मैं पास तुम्हारे आ जाऊँ।
तुम समान बन शिव पद पाकर सदा-सदा को मुस्काऊँ।।
जय जय गौतम गणधर स्वामी अभिरामी अन्तरयामी।
पाप पुण्य पर-भाव विनाशी मुक्ति निवासी सुखधामी।।
ॐ ह्री श्री गौतमगणधर स्वामिने महार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
गौतम स्वामी के वचन भाव सहित उर धार।
मन वच तन जो पूजते वे होते भव पार।।
(इत्याशीर्वादः पुष्पाज्जलि क्षिपामि स्वाहा)

श्री महावीराष्टकस्तोत्रम्

(शिखरिणी छन्दः)

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः,
समं भान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनि लसन्तोऽन्तरहिताः।
जगत्साक्षी मार्ग-प्रगटन-परो भानुरिव यो,
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः)।। 1।।
अताम्रं यच्चक्षुः कमल-युगलं स्पन्द-रहितं,
जनान् कोपापायं प्रकटयति वाभ्यन्तर-मपि।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला,
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः)।। 2।।
नमन्नकेन्द्राली-मुकुट-मणि-भा-जाल-जटिलं,
लसत्पादाम्भोज-द्वयमिह यदीयं तनुभृताम्।
भवज्जवाला-शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि,
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः)।। 3।।
यदर्चा-भावेन प्रमुदित-मना दर्दुर इह,
क्षणादासीत्स्वर्गी गुण-गण-समृद्धः सुख निधिः।
लभन्ते सद्भक्ताः शिव-सुख-समाजं किमु तदा,
महावीमी-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः)।। 4।।

कनत स्वर्णाभासोऽप्यपगत-तनु र्ज्ञान-निवहो,
विचित्रात्माप्येको-नृपति-वर-सिद्धार्थ-तनयः।
अजन्मापि श्रीमान् विगत-भव-रागोऽद्भुत-गतिः,
महावीर स्वामी नयनपथ-गामी भवतु मे (नः)।।5।।
यदीया वाग्गङ्गा विविध-नय-कल्लोल-विमला,
बृहज्ज्ञानाम्भोभि-र्जगति जनतां या स्नपयति।
इदानी-मप्येषा बुध-जन-मरालैः परिचिता,
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः)।।6।।
अनिर्वारोद्रेकस्-त्रिभुवन-जयी काम-सुभटः,
कुमारावस्थाया-मपि निजबलाद्येन विजितः।
स्फुरन् नित्यानन्द-प्रशम-पद-राज्याय स जिनो,
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः)।।7।।
महा-मोहान्तक-प्रशमन-पराकरिमक-भिषङ्,
नरापेक्षो बन्धु-र्विदित-महिमा मंगङलकरः।
शरण्यः साधूनां भव-भयभृता-मुत्तम-गुणो,
महावीर-स्वामी नयन-पथ गामी भवतु मे (नः)।।8।।
महावीराष्टकं स्तोत्रं,भक्त्या 'भागेन्दुना' कृतम्
यः पठेच्छुणुयाच्चापि,स याति परमां गतिम्।।9।।
।।इति महावीराष्टक स्तोत्रम्।।

दीप जल जाने से दीपावली नहीं होती।
दीन दुखियों को खुशहाली नही होती।।
हँसकर गरीबो को अब तो लगा लो सीने से।
द्वेष के भाव से दीवाली न होगी।।
प्रेम की धार बहाओं तो दीवाली होगी।
त्याग,सहयोग दिखाओं तो दिवाली होगी।।
हटाकर छोटे बड़े का भेद क्रम से।
ज्ञान दीप जलाओ तो दीवाली होगी।।

निर्वाण काण्ड (भाषा)

वीतराग वन्दौ सदा,भाव सहित सिरनाय।
कहूँ काण्ड निर्वाण की,भाषा सुगम बनाय।।1।।
अष्टापद आदीश्वर स्वामि, वासुपूज्य चंपापुरि नामि
नेमिनाथ स्वामि गिरनार,वन्दौं भाव भगति उर धार।।2 ।।
चरम तीर्थंकर चरम-शरीर पावपुरि स्वामी महावीर।
शिखरसम्मेद जिनेसुर बीस भावसहित वन्दौं निश-दीस।।3 ।।
वरदत्तराय रु इन्द्र मुनिन्द,सायरदत्त आदि गुणवृन्द।
नगर तारवर मुनि उठकोडि,वन्दौ भावसहित कर जोडि।।4।।
श्री गिरनार शिखर विख्यात,कोडि बहत्तर अरु सौ सात।
सम्बु प्रद्युम्न कुमार द्वैभाय,अनिरुद्ध आदि नमूं तसु पाय।।5 ।।
राम चन्द्र के सुत द्वै वीर,लाडनरिन्द आदि गुणधीर ।
पाँच कोडि मुनि मुक्ति मँझार,पावागिरी वन्दौं निरधार ।।6।।
पाण्डव तीन द्रविड-राजान,आठ कोडि मुनि मुकति पयान।
श्री शत्रुंजय गिरि के सीस,भावसहित वनदौ निश -दीस।।7।।
जे बलभद्र मुकति मे गये,आठ कोडि मुनि औरहु भये।
श्री गजपन्थ शिखर -सुविशाल,तिनके-चरण नमूँ तिहूँ काल।।8।।
राम हनू सुग्रीव सुडील,गवय गवाख्य नील महानील।
कोड़ि निन्यानवै मुक्तिपयान,तुंगीगिरिवन्दौं धरि ध्यान।।9।।
नंग अनंग कुमार सुजान,पाँच कोड़ि अरु अर्ध प्रमान।
मुक्ति गये सोनागिरि शीश,ते वन्दौं त्रिभुवनपति ईस।।10।।
रावण के सुत आदिकुमार मुक्ति गये रेवा-तट सार।
कोटि पंच अरु लाख पचास, ते वन्दौं धरि परम हुलास।।11।।
रेवानदी सिद्धवर कूट पश्चिम दिशा देह जहँ छूट।
द्वै चक्री दश कामकुमार, ऊठकोडि वन्दौं भव पार।।12।।
बड़वानी बड़नयन सुचंग,दक्षिण दिशि गिरि चूल उतंग।
इन्द्रजीत अरु कुम्भ जु कर्ण,ते वन्दौं भव-सागर-तर्ण।।13।।
सुवरण भद्र आदि मुनि चार,पावागिरि-वर शिखर-मँझार।

चेलना नदी-तीर के पास, मुक्ति गये वन्दौं नित तास।। 14।।
फलहोडी बड़गाम अनूप, पच्छिम दिशा द्रोणगिरि रूप।
गुरुदत्तादि -मुनीसुर जहां, मुक्ति गये वन्दौं नित तहाँ।। 15।।
बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय।
श्री अष्टापद मुक्ति मँझार, ते वन्दौ नित सुरत सँभार।। 16।।
अचलापुर की दिश ईसान, तहाँ मेढ़गिरि नाम प्रधान।
साढे तीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूँ चित लाय।। 17।।
वंशस्थल वन के ढिग होय, पश्चिम दिशा कुन्थुगिरि सोय।
कुलभूषण दिशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूँ प्रणाम।। 18।।
दशरथ राजा के सुत कहे, देश कलिंग पाँच सौ लहे।
कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान, वन्दन करूँ जोरि जुगपान।। 19।।
समवसरण श्रीपार्श्व-जिनन्द ,रेसिन्दीगिरि नयनानन्द।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वन्दौं नित धरम-जिहाज।। 20।।
मथुरापुर पवित्र उद्यान, जम्बूस्वामी गये निर्वाण।
चरमकेवली पंचमकाल, ते वन्दौं नित दीनदयाल।। 21।।
तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वन्दन कीजै तहाँ।
मनवचकायसहित सिरनाय, वन्दन करहिं भविकगुणगाय।। 22।।
संवत सतरह सौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
''भैया'' वन्दन करहिं त्रिकाल जय निर्वाणकाण्ड गुणमाल।। 23।।
।। इति निर्वाणकाण्ड भाषा।।

आओं अंधकार मिटाने का हुनर सीखें हम।
कि वजूद अपना बनाने का हुनर सीखे हम।।
रोशनी और बढ़े और उजाला फेले।
दीप से दीप जलाने का हुनर सीखें हम।।

शब्द तुम्हारे दीप बनेगें, अंर्तमन के कलेश हरेगें।
शब्द शब्द हो प्रेम भरा, कैसे मन में द्वेष रहेगें।।

चौसठ ऋद्धि अर्घ्य (चौसठ अर्घ्य चढावें)

ओं ह्रीं अवधिज्ञानबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं मनःपर्ययज्ञानबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं केवलज्ञानबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं बीजबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं कोष्ठज्ञानबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं पदानुसारिणीज्ञानबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं संभिन्नश्रोतृत्वबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं दूरास्वादित्वबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं दूरस्पर्शत्वबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं दूरघ्राणत्वबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं दूर श्रवणवबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं दूर दर्शित्व बुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं दशपूर्वित्वबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं चतुर्दशपूर्विबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं अष्टांगमहानिमित्तबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं प्रज्ञाश्रमणबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं प्रत्येकबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं वादित्वबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं अणिमाविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं महिमाविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं लघिमाविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं प्राप्तिविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं प्रकाम्यविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं ईशत्वविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं वशित्वविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं अप्रतिघातविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं अंतर्धानविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं कामरूपविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ओं ह्रीं नभस्तलगामित्वचारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं जलचारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं जंघाचारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं फलपुष्पपत्रचारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं अग्निधूमचारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं मेघधराचारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं तंतुचारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं ज्योतिश्चारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं मरुच्चारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं उग्रतपःऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं दीप्ततपःऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं तप्ततपःऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं महातपःऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं घोरतपःऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं घोरपराक्रमतपःऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं अघोरब्रह्मचारित्वतपःऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं मनोबलऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं वचनबलऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं कायबलऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं आमषौषधिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं क्ष्वेलौषधिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं जल्लौषधिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं मलौषधिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं विप्रुषौषधिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं सर्वौषधिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं मुखनिर्विषऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं दृष्टिविषार्विषऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं आशीर्विषऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं दृष्टिविषऋद्धय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ओं ह्रीं क्षीरस्राविरसऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं मधुस्राविरसऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं अमृतस्राविरसऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं सर्पिस्राविरसऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं अक्षीमहानसऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं अक्षीमहालसऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

आरती भगवान महावीर स्वामी की

ॐ जय महावीर प्रभो ! स्वामी जय महावीर प्रभो !
कुण्डलपुर अवतारी त्रिशलानंद विभो।। ॐ जय महावीर
सिद्धारथ घर जन्मे वैभव था भारी स्वामी वैभव था........।
बाल ब्रह्मचारी व्रतधारी पाल्यो तप भारी।। ॐ जय महावीर
आतम ज्ञान विरागी सम दृष्टि धारी स्वामी सम दृष्टि धारी ....
माया मोह विनाशक,ज्ञान ज्योति जारी ।। ॐ जय महावीर
जग में पाठ अहिंसा आपहि विस्तारयो ।स्वामी
हिंसा पाप मिटाकर, सुधर्म परिचारयो ।। ॐ जय महावीर
यह विधि चाँदनपुर में अतिशय दरशायो।स्वामी
ग्वाल मनोरथ पूरयो दूध, गाय पायो ।। ॐ जय महावीर
अमर चन्द्र को सपना,तुमने प्रभु दीना।स्वामी
मंदिर तीन शिखर का निर्मित है कीना ।। ॐ जय महावीर
जयपुर नृप भी तेरे,अतिशय के सेवी।स्वामी
एक ग्राम तीन दिनो सेवा हित यह भी ।। ॐ जय महावीर
जो कोई तेरे,दर पर इच्छा कर आवै।स्वामी
मनवांछित फल पावै संकट मिट जावे।। ॐ जय महावीर
निशदिन प्रभु मन्दिर में जगमग ज्योति जले।स्वामी
हम सेवक प्रभु चरणो में आनन्द मोद भरे।। ॐ जय महावीर

साभारः- श्री वर्धमान स्त्रोत्र आर्हत विद्या प्रकाशन
(शुभ मुहर्त देखें:- तीर्थंकर वर्धमान जैन पंचाग इंदौर)